हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G, II sem

विषय - हिन्दी उपन्यास — उद्भव और विकास

उपन्यास गद्य-साहित्य का एक विकसित अंग है। दूसरे शब्दों में मानव जीवन की पूर्ण व्याख्या ही उपन्यास है। कहानी और उपन्यास में एक गहरी समानता है। कहानी जीवन के एक ही अंग को प्रकाशित करती है, जबकि उपन्यास जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म अंगों पर भी दृष्टिपात किए बिना नहीं रहता। कहानी जब पूर्ण विकास पर पहुँचकर मानव-मन के द्वन्द्व और संघर्ष का चित्रण करना आरम्भ करती है तो वहीं से उपन्यास का उदय होता है।

उपन्यास साहित्य का जन्म और विकास वस्तुतः आधुनिक काल की देन है। यद्यपि प्राचीन युग में कादम्बरी, हर्षचरित, बैतालपचीसी, सिंहासन बत्तीसी आदि के अनुवाद मिलते हैं। हिन्दी के सबसे पहले उपन्यासकार "लाला श्रीनिवास दास" 'परीक्षा गुरु' इनका प्रथम उपन्यास माना है। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के शब्दों में

"वह कला हमने पाश्चात्य साहित्य से अपनायी है।"

हिन्दी के भारतेन्दुयुगीन मौलिक उपन्यासों पर संस्कृत की कथा-साहित्य एवं परवर्ती नाटक-साहित्य के प्रभाव के साथ ही बंगला उपन्यास की छाप भी लक्षित की जा सकती है। उस युग के उपन्यासकारों में लाला श्रीनिवास (परीक्षागुरु), किशोरीलाल गोस्वामी (त्रिवेणी), बालकृष्ण भट्ट, जगन्नाथ सिंह, राधाकृष्ण दास, देवकीनन्दन खत्री और गोपाल राम गहमरी आदि प्रमुख हैं। भारतेन्दु में सामाजिक, ऐतिहासिक, जासूसी एवं रोमांस उपन्यासों की रचना-परम्परा का सूत्रपात हुआ।

देवकीनन्दन खत्री भी उपन्यास के क्षेत्र युग के दूसरे चरण के लोकप्रिय लेखक थे। इनके उपन्यास कौतूहलप्रधान होते थे। पाठकों में पढ़ने की गहरी रुचि पैदा करने में इनका महत्व स्थान रहा है। 'चन्द्रकान्ता' तथा 'चन्द्रकान्ता पढ़ने की जिज्ञासा ने उर्दू के पाठकों को भी सीखने के लिए बाध्य कर दिया। इनके पढ़ने से प्रतीत होता है कि उपन्यास का अभिनेता एक जादूगर के समान है, जो

है, वैसा ही कार्य सिद्ध कर लेता है। उनके उपन्यास में कौतूहल और मनोरंजन के अतिरिक्त जीवन का चित्रण नहीं मिल पाता। उस युग में जासूसी उपन्यासों का ही बोलबाला था।

गोपालराम गहमरी ने आरम्भ में अंग्रेजी उपन्यासों का अनुवाद किया, उसके बाद मौलिक उपन्यास भी लिखे। उनके उपन्यासों की कुल संख्या दो सौ से अधिक है। मौलिक उपन्यासकारों में श्री किशोरीलाल गोस्वामी का नाम प्रमुख है। उन्होंने घटनाओं की प्रधानता को हटाकर उनमें कल्पनाओं तथा भावना का सुन्दर समावेश किया है। उन्होंने सामाजिक तथा ऐतिहासिक उपन्यासों का भी सूत्रपात किया है। गोस्वामी जी के पश्चात् अयोध्या सिंह उपाध्याय ने 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' उपन्यास की रचना की।

इस युग तक हिन्दी-उपन्यास अपने बाल्यकाल में ही रहा। उपन्यास का ध्येय केवल मनोरंजन ही करना था। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि के साथ-साथ उपन्यासों में भी सामाजिक राजनीतिक तथा धार्मिक चेतना से एक का प्रसार हुआ। द्विवेदीयुग में साम

उपन्यासकारों में 'लज्जाराम शर्मा', अयोध्या सिंह उपाध्याय, राधिकारमण प्रसाद सिंह आदि उपन्यासों में सुधारवादी दृष्टि की झलक है।

द्विवेदीयुग के उपरान्त प्रेमचन्द ने यथार्थोन्मुखी आदर्शवाद उपन्यासों द्वारा हिन्दी उपन्यास साहित्य को एक नई दिशा दी। इन्हें उपन्यास साहित्य का सम्राट कहा जाता है। सम और परिवार की समस्याओं, उलझनों, झूठी मर्या और पाखण्डों को खोलकर प्रेमचन्द ने उपन्यास जीवन से जोड़ा। 'डॉ० नामवर सिंह' प्रेमचन्द के उप को किसानों के महाकाव्य के रूप में देखते हैं। प्रेमचन्द का काल जन-चेतना की सुगबुगाहट क काल है।

प्रेमचन्द ने पहला उपन्यास 'सेवासद नारी मुक्ति एवं साम्प्रदायिकता की समस्या को है। 'सेवासदन' में ही उन्होंने सामन्त किसान सं का बीज भी बो दिया था। उन्होंने 'पुराना जमान जमाना' शीर्षक निबन्ध में लिखा है —'आनेवाल अब किसानों और मजदूरों का है।' 'प्रेमाश्रय' 'रंगभूमि' निर्धन - निर्बल भारतीय इन्सान